। भीखारी ।

हुआ जन्म किसी फूटपातों पर,
वहीं से शुरु हुई जिन्दगी ।
पेट में दाना न जाने से,
बचपन से रोता आया ।

यहाँ से वहाँ भटकता हुआ,
हर रोज की गालियाँ सुनकर;
हुई दिमाग में पेदा नफरत की –
जिन्दगी को गालीयाँ देता रहा ।

प्यार का न रहा नाता,
जिन्दगी का न रहा माजरा ।
टूटे हुए दिल को –
-अखेलापन महसूस करता ।

कहता ऊपर वाले को –
-मत दी जन्म हमें एसा ।
जिनदगी से थक गया हूँ में-
-बुलाले तूं मुझे ... ।

Roopesh. H

॥ वह गिर पडा ॥

वह गिर पडा हैं
सोचा मैं ने क्यों ?

फुलवारी में एक गुलाब था
जो मुझको सबसे प्यारा था
दुलारीसी देख – देखकर
मैं होता था भावविभोर

निकला उसमें मुकुल एक दिन
कुतूहल से भरा मेरा मन
विकास के प्रत्यावर्तन पर
मंत्र मुग्ध हो जीवन सार

खिला फूल निकली खुशबू
दूर रहे दल – दल की बदबू
महक बढें, जातीयता मिट
मिल जायें सब, बास कर बाँट

सुख - दुख की चाल चलन में
देखा मैं ने रानी का वास
उच्च नीच का काल कितना
कहना गिनना सोचना क्या ?

वह गिर पडा है
सोचा मैं ने क्यों ?

Manoj. E